Subject (13) - C-6 Gender School & Society

September 2005

22 thu

Topic :- अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण (1) :-
(Cross-Cultural Perspective)

समाज में विभिन्न संस्कृतियों में महिला-पुरुषों की स्थिति भिन्न-भिन्न है। पितृसत्तात्मक समाजों में पुरुषों को अधिक महत्व तथा मातृसत्तात्मक समाजों में माता का अधिक महत्व दिया जाता है। समाज चाहे किसी भी सत्ता पर आधारित हो महिला लिंग की सभी संस्कृतियों में स्थिति खराब है। इसका मुख्य कारण महिलाओं की अशिक्षा, अज्ञानता, शारीरिक दुर्बलता एवं आर्थिक

23 fri

परतन्त्रता है। लिंग असमानता की अभिवृत्ति माता-पिता से अधिक होती है। परिवार से ही लिंग असमानता की प्रवृत्ति प्रारम्भ होती है और धीरे-धीरे वह समाज में व्याप्त हो जाती है।

हम अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं पर विस्तारपूर्वक विश्लेषण करेंगे :—

(i) अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण तथा लिंग असमानता
(Cross-Cultural Perspective and Gender Inequalities)

24 sat

(ii) अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण 25 sun तथा धार्मिक परिप्रेक्ष्य)
(Cross-Cultural Perspective and Religion Context)

(iii) अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण तथा जातीय परिप्रेक्ष्य)
(Cross-Cultural Perspective and Castism Context)

(iv) अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण तथा ग्रामीण व नगरीय परिप्रेक्ष्य
(Cross-Cultural Perspective and Rural-City Background)

अन्तःसांस्कृतिक चित्रण एवं लिंग असमानता

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Notes

लिंग असमानता के परिप्रेक्ष्य में

Scanned with CamScanner

26 mon यदि देखा जाये तो विभिन्न संस्कृतियों में लिंग असमानता के भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं। निर्धन व अशिक्षित राज्यों में तथा पितृसत्तात्मक समाजों में पुरुष को घर का कर्ताधर्ता माना जाता है।

भारतीय समाज में लिंग असमानता के निम्न कारण हैं:-

(i) पितृसत्तात्मक व्यवस्था
(ii) महिलाओं का शोषण।
(iii) गरीबी एवं शिक्षा का अभाव
(iv) असमान वेतन
27 tue (v) समुचित तथा पौष्टिक भोजन का अभाव

प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिल्विया वाल्बे के अनुसार "पितृसत्ता सामाजिक संरचना की ऐसी व्यवस्था है, जिसमें पुरुष, महिला पर अपना प्रभुत्व जमाता है, उसका दमन करता है और उसका शोषण करता है।"

धार्मिक परिप्रेक्ष्य में अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण:-

प्रमुख धर्मों में हिन्दू, इस्लाम, ईसाई एवं सिक्ख
28 wed प्रमुख है। सभी धर्मों में विवाह को प्रमुख स्थान दिया गया है। हिन्दू धर्म में एक धार्मिक बन्धन तथा मुस्लिम धर्म में यह एक सामाजिक समझौता माना गया है। प्रायः सभी धर्मों में पुन विवाह तथा विवाह-विच्छेद को अच्छा नहीं माना गया है। तलाक तथा पर्दा प्रथा के कारण स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। ईसाइयों में जीवन साथी का चुनाव अधिक स्वतंत्र वातावरण में होता है तथा इसे पवित्र बन्धन माना जाता है। ईसाई महिलाओं की स्थिति अन्य की तुलना में अच्छी मानी जाती है। सिक्ख धर्म को पूर्णतया ईश्वरवादी माना जाता है। इस धर्म में स्त्री को समान समझा जाता है तथा आचरण की पवित्रता को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। मुस्लिम धर्म में तलाक तथा पर्दा प्रथा के कारण स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय

August 2005 Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

Notes

Scanned with CamScanner

Subject - C-6 Gender, School & Society

September/October 2005

29 thu Topic :- अन्तःसांस्कृतिक चित्रण (II)

जातीय परिप्रेक्ष्य में अन्तःसांस्कृतिक चित्रण :-

भारतीय समाज में जातीय व्यवस्था में हर जाति का एक स्तर है जो ऊँच-नीच पर आधारित है तथा यह स्तर जन्म पर आधारित होने के कारण स्थिर है। भारतीय समाज में जातीय स्तर तीन रूपों में दिखाई देता है :-

(i) सवर्ण जातियाँ
(ii) पिछड़ी जातियाँ
30 fri (iii) अनुसूचित जातियाँ

सवर्ण जातियाँ :- सवर्ण जातियों में सर्वाधिक लिंग असमानता दिखाई देती है। भ्रूण हत्यायें अधिकतर सवर्ण जातियों में ही पायी जाती है। दहेज-प्रथा भी सवर्ण जातियों से ही अन्य जातियों में पहुँची है। यद्यपि सवर्ण जातियाँ सर्वाधिक शिक्षित होती है, फिर भी छुआछूत अत्यधिक मानती है। इनमें ही सती प्रथा सर्वाधिक व्याप्त थी। सवर्णों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त होता है।

1 sat **पिछड़ी जातियाँ :-** 2 sun पिछड़ी जातियाँ उनको कहा जाता है जो सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़ी हैं। पिछड़ी जातियों में भी भ्रूण हत्या प्रचलित था। इन जातियों में पुत्रों को अधिक महत्व दिया जाता है। वर्तमान में ये जातियाँ काफी उन्नति कर रही है।

अनुसूचित जातियाँ :-

अनुसूचित जातियों को समाज में सबसे नीचे रखा जाता है। इन जातियों में लिंग असमानता कम है। विधवा विवाह तथा पुनर्विवाह आदि को अधिक बुरा नहीं माना जाता है।

November 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

Notes **अनुसूचित जनजातियाँ :-**

अनुसूचित जनजातियाँ अधिकतर जंगलों तथा पहाड़ों पर पृथक जीवन बिताती है। उनका आर्थिक

P.T.O

Scanned with CamScanner

October 2005

3 mon विकास-स्तर निम्नतर है। जनजातियों में लिंग असमानता की स्थिति अत्यन्त विषम है। नारीशोषण का अधिकतर मामला इसी जाति में घटित होती है।

ग्रामीण तथा नगरीय परिप्रेक्ष्य में अन्तर्सांस्कृतिक चित्रण :-

ग्रामीण समुदाय :- ग्रामीण समुदाय से अभिप्राय ऐसे समुदाय से है जो एक स्थान पर निवास करते

4 tue हैं, जिनकी जीविका भूमि से उत्पन्न वस्तुओं से अर्जित होती है ग्रामीण समुदाय में लिंग असमानता पूर्ण रूप से व्याप्त है। महिलाओं का कार्य केवल रसोईघर संभालना, घर में रहना, बच्चों का पालन-पोषण तक सीमित है। सम्पत्ति, राजनीति तथा सामाजिक क्रियाकलापों में पुरुष की ही भागीदारी होती है। ग्रामीण समुदाय में शिक्षा तथा जीवन का निम्न-स्तर देखने को मिलता है।

शहरी समुदाय :- नगरीय समुदाय एक ऐसा समुदाय

5 wed है जिसमें गैर कृषि व्यवसायों की प्रमुखता, उच्च जनसंख्या घनत्व पायी जाती है। जनसंख्या की अधिकता के कारण ही नगरों में अनेक सामाजिक समस्याएँ जैसे - बेकारी की समस्या, आवास की समस्या आदि उत्पन्न हो जाती है। नगरों में शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। धर्म को कम तथा धन को अधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। ग्रामों की तुलना में नगरों में महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता है। वे घर तथा बाहर दोनों जगह कार्य करने में सक्षम हो रही है। बच्चों को घूमने-फिरने तथा मनोरंजन की ही स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती बल्कि जीवन साथी चुनने में भी उनकी राय ली जाती है।

September 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

Notes

Scanned with CamScanner

Subject - C-6 Gender school & society

3 thu

Topic :- Paradigm shift in female Education
(स्त्री शिक्षा में प्रतिमान विस्थापन)

शिक्षा के बिना किसी सभ्य मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी और जानवर भी अपने बच्चों को पर्यावरण से संघर्ष करने की शिक्षा प्रदान करते हैं।

प्रत्येक बालक की पहली शिक्षा का प्रारम्भ उसके परिवार से तथा प्रथम शिक्षिका माता होती है। प्रत्येक प्रकार की शिक्षा और उसके प्रति सम्मान का बीजवपन परिवार से होता है। अतः स्त्री शिक्षा

4 fri

और लैंगिक शिक्षा की नींव भी परिवार से ही पड़ती है। लैंगिक शिक्षा के द्वारा बालक-बालिकाओं में स्वस्थ, सकारात्मक तथा उदार लैंगिक दृष्टिकोण का विकास होता है। लैंगिक मुद्दों के प्रति जागरूक बनाने के लिये शिक्षा की आवश्यकता अत्यधिक है।

आवश्यकता तथा महत्व :-

स्त्री-शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा की वर्तमान

5 sat

में आवश्यकता तथा महत्व अधिक है। क्योंकि स्त्रियों की अनदेखी करके और उनको पुरुषों की अपेक्षा निम्न स्थान प्रदान करने से किसी भी सभ्य समाज की स्थापना नहीं हो सकती है। स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा में प्रतिमान विस्थापन निरन्तर चल रहा है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ इत्यादि में नये-नये प्रयोग किये जा रहे हैं। नवाचारों के प्रयोग द्वारा और प्रभावी तथा बोधगम्य बनाया जा रहा है।

sun

स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा के प्रतिमानों की आवश्यकता तथा महत्व का आकलन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है :-

Notes

(i) समाज की कुरीतियों की समाप्ति के लिये प्रतिमान विस्थापन (क्रांतिकारी बदलाव) अत्यावश्यक है।

December 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

P.T.O

Scanned with CamScanner

November 2005

7 mon (ix) स्त्री-पुरुषों के मध्य स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने के लिये लैंगिक शिक्षा के नवीन प्रतिमानों की आवश्यकता अत्यधिक है।

(xi) प्रतिमानों का विस्थापन, सामाजिक परिवर्तन तथा गतिशीलता के लिए भी आवश्यक है।

(xii) लैंगिक मुद्दे धीरे-धीरे जटिल होते जा रहे हैं जिनको सुलझाने के लिए नवीन प्रतिमानों की आवश्यकता होती है।

(v) लैंगिक मुद्दे तथा स्त्री शिक्षा पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर प्रभाव पड़ने से भी इनके प्रतिमानों में विस्थापन की आवश्यकता होती है।

8 tue (vi) नवीन तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ नवीन प्रतिमान भी आते हैं।

(vii) समय में परिवर्तन होने के साथ-साथ प्रतिमानों में भी परिवर्तन आना अवश्यम्भावी है।

(viii) स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा की आवश्यकतायें परिवर्तित होती रहती है, अतः पुराने प्रतिमानों का विस्थापन आवश्यक है।

(ix) प्रतिमानों का विस्थापन होगा तभी नवीन प्रतिमानों और विचारों को स्थान प्राप्त होगा।

9 wed (x) लोकतंत्रीय आदर्श में स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा के प्रतिमानों में विस्थापन होना आवश्यक है।

आज राष्ट्र की प्रगति, सामाजिक उत्थान में स्त्रियों की भागीदारी बढ़ी है। वे आज राजनैतिक, सामाजिक, अवकाश के समय के सदुपयोग तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिये शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। स्त्रियाँ सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख अभिकर्ता है। स्त्री शिक्षा और लैंगिक शिक्षा के प्रतिमानों (आदर्शों) में समय-समय पर आया परिवर्तन ही उसके विस्थापन और बदलती हुई परिस्थितियों के साथ परिवर्तन होने का द्योतक है।

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Notes
30	31						
2	3	4	5	6	7	8	
9	10	11	12	13	14	15	
16	17	18	19	20	21	22	
23	24	25	26	27	28	29	

Scanned with CamScanner

Topic :- Measurements & Suggestions for Paradigm Shift
(प्रतिमान विस्थापन हेतु उपाय तथा सुझाव)

प्राचीनकाल से आधुनिककाल तक समाज की आवश्यकताओं में परिवर्तन आया है। निश्चित रूप से स्त्री शिक्षा और लैंगिक शिक्षा के आदर्शों में परिवर्तन आया है। ये दोनों ही विषय ज्वलन्त तथा राष्ट्रहित के हैं।

स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा के प्रतिमानों में विस्थापन हेतु उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं :-

(i) सांस्कृतिक कारक
(ii) सामाजिक कारक
(iii) आर्थिक कारक
(iv) धार्मिक कारक
(v) राजनैतिक कारक
(vi) राष्ट्रीय कारक
(vii) अन्तर्राष्ट्रीय कारक

सांस्कृतिक कारक :- पहले स्त्रियों को घर-गृहस्थी की शिक्षा, स्त्रियोचित गुणों के विकास की शिक्षा तथा स्त्री धर्म का पालन करना सिखाया जाता था परन्तु सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ-साथ स्त्री शिक्षा के प्रतिमानों में भी परिवर्तन आया और स्त्रियों को सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान की जा रही है।

सामाजिक कारक :- पहले समाज में रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों का प्रचलन अत्यधिक था, जिसके कारण पर्दा प्रथा, देवदासी प्रथा, विधवा पुनर्विवाह, बाल-विवाह इत्यादि का प्रचलन था, जिससे सामाजिक गतिशीलता अवरुद्ध हो रही थी। समाज-सुधारकों द्वारा इसे समाप्त करने का प्रयास किये गये तथा स्त्री-शिक्षा के नवीन प्रतिमानों की स्थापना की गई और आज समाज में बालक और बालिकाओं दोनों को ही प्रमुखता से स्थान प्रदान किया जा रहा है।

Scanned with CamScanner

14 mon **धार्मिक कारक :-** धार्मिक रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं के कारण भी स्त्रियों की शैक्षिक व सामाजिक स्थिति को हीन-हीन दशा में रखा गया परन्तु धर्म के मूल तत्व समानता, प्रेम, भ्रातृत्व, मानवता का पाठ पढ़ाते हैं।

राजनैतिक कारक :- लोकतंत्र की सफलता वहाँ के सुयोग्य तथा सुशिक्षित नागरिकों पर ही आधारित है। स्त्रियों की शिक्षा और लैंगिक मुद्दों के प्रतिमानों के विस्थापन में राजनैतिक कारक महत्वपूर्ण है।

15 tue **आर्थिक कारक :-** आर्थिक कारकों के कारण भी स्त्री शिक्षा के प्रचीन प्रतिमानों में विस्थापन हुआ तथा लैंगिक शिक्षा को लैंगिक भेदभावों में कमी लाने का प्रयास किया जा रहा है।

राष्ट्रीय कारक :- राष्ट्रीय कारकों के अन्तर्गत राष्ट्रीय एकता, विकास तथा उन्नति आती है। स्त्री शिक्षा के बिना राष्ट्रीय एकता और विकास की स्थापना नहीं हो पायगी।

उपाय तथा सुझाव :- स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा में प्रतिमान विस्थापन के लिए निम्न उपाय तथा सुझाव

16 wed अपनाये जाने चाहिए :— (i) आम सहमति बनाना चाहिये
(ii) राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मानकों का ख्याल रखना चाहिये
(iii) भारतीय समाज के मूल तत्वों से अवगत होना आवश्यक है।
(iv) सांस्कृतिक तत्वों पर ध्यान देना चाहिये।
(v) समाज की आवश्यकताओं पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।
(vi) वयस्क शिक्षा, समाज शिक्षा तथा दूरस्थ शिक्षा और पत्राचार पाठ्यक्रमों को अपनाना चाहिये।
(vii) नवाचारों तथा तकनीकों को अपनाया जाना चाहिये।
(viii) स्त्री शिक्षा तथा लैंगिक शिक्षा में प्रतिमान विस्थापन के लिये आर्थिक हितों तथा संसाधनों का विकेन्द्रीकरण होना चाहिये।

Notes

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Scanned with CamScanner

Topic :- Gender role in Society through family
(परिवार द्वारा समाज में लिंग भूमिकाएँ)

पुरुष तथा महिला समाज के दो ऐसे लिंग है जो एक-दूसरे के विरोधी नहीं है, बल्कि पूरक है। सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण इन दोनों लिंगों के द्वारा ही होता है। जीवन की सकारात्मक उन्नति तथा समृद्धि के लिये दोनों का केवल शिक्षित होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि कुछ अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका परस्पर अनुकूलन करना भी आवश्यक है।

समाज में लैंगिक भूमिकाओं के लिये मुख्य रूप से परिवार, जाति, धर्म तथा संस्कृति का विशेष रूप से महत्व है।

परिवार की भूमिका :

परिवार को प्रथम पाठ्शाला के रूप में जाना जाता है। लिंग की समानता हेतु शिक्षा मे परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवार ही वह प्रथम अभिकरण है जो बालक के विकास पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है

परिवार मानव समाज की प्राचीनतम तथा आधारभूत इकाई है।

बलेथर के अनुसार :- "परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते है जो माता-पिता तथा उनकी सन्तानों के मध्य पायी जाती है।"

मैकाइवर तथा पेज :- "परिवार एक ऐसा समूह है जो पर्याप्त रूप से लैंगिक सम्बन्धों पर आधारित होता है तथा जो इतना स्थायी होता है कि इसके द्वारा बालकों के जन्म तथा पालन-पोषण की व्यवस्था हो जाती है।"

Notes

लिंग की समानता शिक्षा में पहला पाठशाला परिवार के रूप में जाना जाता है। हमारा परिवार छोटा है या बड़ा, जब लिंग

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

December 2005

P.T.O.

Scanned with CamScanner

21 mon समानता विचारधारा को नहीं अपनायेंगे तो यह कार्य सफल नहीं हो सकेगा। माता-पिता परिवार के अभिभावक के साथ-साथ संरक्षक भी होते हैं।

अतः चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता के लिए परिवार में माता, पिता और जो भी अभिभावक तथा संरक्षक हैं उन्हें निम्न भूमिका निभानी चाहिये :—

(i) समानता का व्यवहार
(ii) सर्वांगीण विकास का कार्य
22 tue (iii) पारिवारिक कार्यों में समान सहभागिता
(iv) हीनतायुक्त शब्दावली का प्रयोग निषेध
(v) बालिकाओं के विद्यालयीकरण तथा समाजीकरण को प्रोत्साहित करें।
(vi) साथ-साथ रहने, कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास
(vii) जिम्मेदारियों का अभेदपूर्ण वितरण
(viii) आर्थिक संसाधनों पर एकाधिकार की प्रवृत्ति का समापन
(ix) अन्धविश्वासों तथा जड़ परम्पराओं का बहिष्कार
(x) व्यावसायिक कुशलता की शिक्षा

23 wed

अतः हम कह सकते हैं कि परिवार ही वह संस्था है जो प्रेम, सहानुभूति, त्याग, करुणा, परोपकार इत्यादि मानवीय मूल्यों के साथ-साथ बालकों में विचार तथा व्यापकता भरता है। कोई भी बच्चा सर्वप्रथम परिवार के सदस्यों से सीखता है, उसका अनुकरण करता है और आदर्श मानता है। ऐसे में परिवार को प्रशिक्षक के रूप में अपने इस महान दायित्व का बोध होना चाहिये। परिवार लिंग की समानता के प्रारम्भ की महत्वपूर्ण इकाई है और

October 2005						
Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Notes यह परिवर्तन परिवार से होते हुए समाज और सम्पूर्ण देश में धीरे-धीरे होता है।

—x—

Scanned with CamScanner

(18) Subject - PSS-10 Pedagogy of Science (1)

October 2005

27 thu

Topic - Objectives of Teaching Science
(विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य)

जीव विज्ञान की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना तथा उसके विकास के लिये उपयुक्त अवसर देना है। किसी भी विषय को पढ़ाने से पहले उस विषय के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित कर लेना आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना शिक्षण कार्य सही ढंग से नहीं चल सकता।

जॉन डेवी के अनुसार :-

28 fri

"एक उद्देश्य एक पूर्वदर्शी है और जो कुछ गतिविधियों को दिशा देता है या मानव व्यवहार को प्रेरित करता है।"

किसी भी कार्य को सुचारु रूप से करने के लिये आवश्यक है कि उसके उद्देश्य व लक्ष्य निर्धारित किए जाए। उद्देश्य क्रिया को निश्चित दिशा प्रदान करते है। संसार में जितनी भी क्रियाएँ होती है वे किसी लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है।

29 sat

लक्ष्य तथा उद्देश्य (Aim & Objectives)

30 sun

एक लक्ष्य वो होता है जिसे हम वांछित परिणाम कहते हैं, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुसार प्राप्त करना चाहता है। यह एक टारगेट होता है जो एक व्यक्ति पाना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है।

उदाहरण - कोई व्यक्ति डॉक्टर बनना चाहता है अर्थात उसका लक्ष्य डॉक्टर बनना है।

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उद्देश्य को निर्धारित किया जाता है। उद्देश्य आमतौर पर दीर्घकालिक होते हैं।

उदाहरण :- व्यक्ति का लक्ष्य डॉक्टर बनने के लिए आवश्यक डॉक्टरेट हासिल करना है।

November 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

Notes

P.T.O

Scanned with CamScanner

October/November 2005

31 mon

लक्ष्य और उद्देश्य में अंतर :-

(i) लक्ष्य का क्षेत्र व्यापक होता है पर उद्देश्य का क्षेत्र सीमित।

(ii) लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सम्पूर्ण विद्यालय-कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है पर उद्देश्य की प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ-विशेष की विषयवस्तु पर होता है।

(iii) लक्ष्य की प्राप्ति में अधिक समय लगता है पर उद्देश्य में अपेक्षाकृत कम

(iv) लक्ष्य में आदर्शवादिता होती है इसलिये इसे प्राप्त करना संभव है भी और नहीं लेकिन उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है

1 tue क्योंकि उद्देश्य में व्यावहारिकता होती है।

(v) लक्ष्य में सीखनेवालों को स्पष्ट शिक्षा-निर्देश नहीं दिए जाते हैं जबकि उद्देश्य में निश्चित और स्पष्ट शिक्षा-निर्देश दिये जाते हैं।

(vi) Aim आपके उस सवाल का उत्तर है कि "आप क्या पाना चाहते हैं?" और objective आपके उस सवाल का उत्तर है कि "आप कैसे अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे?"

(vii) लक्ष्य किसी व्यक्ति के मिशन तथा उनकी प्रयोजन से जुड़ा होता है जबकि उद्देश्य व्यक्ति की उपलब्धियों से जुड़ा होता है।

2 wed

लक्ष्य और उद्देश्य का एक उदाहरण :-

लक्ष्य :- वजन कम करने के लिए

उद्देश्य :- → अधिक फल और सब्जियाँ खाएँ।
→ फलों के रस और शक्कर वाले पेय से बचें।
→ हर दिन 8 गिलास पानी पिएँ।

Note → आप जो खाते हैं, उसे लिख लें।
→ एक वजन चार्ट बनाए रखें।

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22

Scanned with CamScanner